ੴ सतिगुर प्रसादि

अनंद साहिब

रामकली महला 3 अनंद
ੴ सतिगुर प्रसादि।।

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मैं पाइआ।। सतिगुरू त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ।। राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ।। सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ।। कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मैं पाइआ ।।1।।

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले।। हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा।। अंगीकारू ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा।। सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे।। कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ।।2।। साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै।। घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए।। सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए।। नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे।। कहै नानकु सचे साहिब किआ नाहीं घरि तेरै।।3।। साचा नामु मेरा आधारो।। साचु नामु अधारू मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ।। करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ।। सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ।। कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो।। साचा नामु मेरा आधारो ।।4।। वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै।। घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ।। पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ।। धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे।। कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ।।5।।

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे।। पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे।। दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी।। संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी।। सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरू रहिआ भरपूरे।। बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे।।40।।1 ।।

पवणु गुरू पाँणी पिता माता धरति महतु।।
दिवस राति दुइ दाई दाइआ
खेलै सगल जगतु।।
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि।
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि।।
जिनी नांमु घिआइआ गए मसकति घालि।
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि।।

आरती

पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है। ''आरती'' गुरूसाहिबान की वाणी का वह संकलित रूप है जिसका गायन संध्या के समय ''सोदर रहरासि'' के उपरान्त किया जाता है। गुरू नानक साहिब ने परम्परागत ''आरती'' का उदाहरण लेकर अपने इष्टदेव अकाल पुरूष परमात्मा की विराट आरती का निरूपण जगन्नाथपुरी में किया है अर्थात ''गगन में थाल रवि चंदु दीपक बने .....'' गगन को थाल, रवि–शशि को दीपक, तारक मण्डल को मोती, मलयानल को धूप, पवन को चँवर तथा वनस्पति को फूल माला बनाकर आरती सजायी है।

भगति करंते, तिनके काज सवारता ॥१॥ रहाउ ॥ दालि सीधा मागउ घीउ ॥ हमरा खुसी करै नित जीउ ॥ पन्हीआ छादनु नीका ॥ अनाजु मगउ सत सी का ॥ गऊ भैस मगउ लावेरी ॥ इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥ घर की गीहनि चंगी ॥ जनु धंना लेवै मंगी ॥ २ ॥ ४ ॥

सवैया ॥

याते प्रसंनि भए है महां मुनि, देवन के तप मै सुख पावैं ॥ जग्य करै इक बेद रटै भव ताप हरै मिलि धिआनहि लावैं ॥ झालर ताल म्रिदंग उपंग रबाब लीए सुर साज मिलावैं ॥ किंनर गंध्रब गान करै गनि जच्छ अपच्छर निरत दिखावैं ॥५४॥ संखन की धुनि घंटनि की करि फूलन की बरखा बरखावैं ॥ आरती कोटि करै सुर सुंदर पेख पुरंदर के बलि जावैं ॥ दानति दच्छन दै कै प्रदच्छन भाल मै कुंकम अच्छत लावैं ॥ होत कुलाहल देवपुरी मिलि देवन के कुलि मंगल गावैं ॥५५॥

हे रवि, हे ससि, हे करुणानिध, मेरी अबै बिनती सुनि लीजै ॥ अउर न मांगत हउ तुम ते कछु, चाहत हउ चित मै सोई कीजै ॥ सत्रुन सिउ अति ही रण भीतर, जूझ मरो कहि साच पतीजै ॥ संत सहाइ सदा जग माइ, क्रिपा करि सयाम इहै बरुदीजै ॥१९००॥

पांइ गहे जब ते तुमरे, तब ते कोऊ आंख तरे नही आन्यो ॥ राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥ सिंम्रित सासत्र बेद सभै बहु भेद कहै हम एक न जान्यो ॥ श्री असिपान क्रिपा तुमरी करि, मै न कह्यो सभ तोहि बखान्यो ॥७ ॥

दोहरा

सगल दुआर कउ छाडि कै गहिओ तुहारो दुआर ॥ बांहि गहे की लाज असि गोबिंद दास तुहार ॥८६४॥ ऐसे चंड प्रताप ते देवन बढिओ प्रताप ॥ तीन लोक जै जै करै, रटै नाम सति जापि ॥५६॥ चत्र चक्क्र वरती चत्र चक्क्र भुगते ॥ सुयंभव सुभं सरबदा सरब जुगते ॥ दुकालं प्रणासी दइआलं सरूपे ॥ सदा अंग संगे अभंगं बिभूते ॥१९९॥

विनती

तुम ठाकुरु तुम पहि अरदास ।।
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ।।

तुम मात पिता हम बारिक तेरे ।।
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे ।।

कोइ न जानै तुमरा अंतु ।।
ऊचें ते ऊचा भगवंत ।।

सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ।।
तुम ते होइ सु आगिआकारी ।।

तुमरी गति मिति तुम ही जानी ।।
नानक दास सदा कुरबानी ।।

भगति करंते, तिनके काज सवारता ॥१॥ रहाउ ॥ दालि सीधा मागउ घीउ ॥ हमरा खुसी करै नित जीउ ॥ पन्हीआ छादनु नीका ॥ अनाजु मगउ सत सी का ॥ गऊ भैस मगउ लावेरी ॥ इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥ घर की गीहनि चंगी ॥ जनु धंना लेवै मंगी ॥ २ ॥ ४ ॥

सवैया ॥

याते प्रसंनि भए है महां मुनि, देवन के तप मै सुख पावैं ॥ जग्य करै इक बेद रटै भव ताप हरै मिलि धिआनहि लावैं ॥ झालर ताल म्रिदंग उपंग रबाब लीए सुर साज मिलावैं ॥ किंनर गंध्रब गान करै गनि जच्छ अपच्छर निरत दिखावैं ॥५४॥ संखन की धुनि घंटनि की करि फूलन की बरखा बरखावैं ॥ आरती कोटि करै सुर सुंदर पेख पुरंदर के बलि जावैं ॥ दानति दच्छन दै कै प्रदच्छन भाल मै कुंकम अच्छत लावैं ॥ होत कुलाहल देवपुरी मिलि देवन के कुलि मंगल गावैं ॥५५॥

हे रवि, हे ससि, हे करुणानिध, मेरी अबै बिनती सुनि लीजै ॥ अउर न मांगत हउ तुम ते कछु, चाहत हउ चित मै सोई कीजै ॥ सत्रुन सिउ अति ही रण भीतर, जूझ मरो कहि साच पतीजै ॥ संत सहाइ सदा जग माइ, क्रिपा करि सयाम इहै बरुदीजै ॥१९००॥

पांइ गहे जब ते तुमरे, तब ते कोऊ आंख तरे नही आन्यो ॥ राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥ सिंम्रित सासत्र बेद सभै बहु भेद कहै हम एक न जान्यो ॥ श्री असिपान क्रिपा तुमरी करि, मै न कह्यो सभ तोहि बखान्यो ॥७ ॥

दोहरा

सगल दुआर कउ छाडि कै गहिओ तुहारो दुआर ॥ बांहि गहे की लाज असि गोबिंद दास तुहार ॥८६४॥ ऐसे चंड प्रताप ते देवन बढिओ प्रताप ॥ तीन लोक जै जै करै, रटै नाम सति जापि ॥५६॥ चत्र चक्क्र वरती चत्र चक्क्र भुगते ॥ सुयंभव सुभं सरबदा सरब जुगते ॥ दुकालं प्रणासी दइआलं सरूपे ॥ सदा अंग संगे अभंगं बिभूते ॥१९९॥

विनती

तुम ठाकुरु तुम पहि अरदास ।।
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ।।

तुम मात पिता हम बारिक तेरे ।।
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे ।।

कोइ न जानै तुमरा अंतु ।।
ऊचें ते ऊचा भगवंत ।।

सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ।।
तुम ते होइ सु आगिआकारी ।।

तुमरी गति मिति तुम ही जानी ।।
नानक दास सदा कुरबानी ।।